साहित्यसुधा
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यकारों की रचना स्थली
वर्ष: 3, अंक 45, सितम्बर(द्वितीय) , 2018

वह शाम

पवनेश ठकुराठी 'पवन'

नैनीताल की झील के किनारे खड़ा वह झील की मछलियों को ही तो देख रहा था। मछलियों को ही देख रहा था या कुछ और कर रहा था। हां सचमुच मछलियों को ही देख रहा था। बीच- बीच में कभी-कभार उसका ध्यान सड़क पर दौड़ती छुटपुट गाड़ियों पर भी चला जाता था।

सावन का महिना था। आसमान में काले -काले बादल छाये हुए थे। काली हैट पहने हुए वह आदमी बड़ी गहरी निगाहों से ताल की गहराई को तलाशता जा रहा था। अचानक उसके कान में एक आवाज आई- एक्सक्यूज मी ! वह चौंक पड़ा ! जैसे ही उसने नजर घुमाई सामने एक खूबसूरत लड़की को खड़ा पाया। उसने प्रत्युत्तर दिया- जी !

लड़की ने पूछा-क्या आप ही डॉ0 मेहता हैं ?

हैट वाले युवक ने लड़की को पहचानकर भी अनजान बनते हुए जबाब दिया- जी, हां मैं ही हूँ।

लड़की के चेहरे पर मुस्कान तैर गई- मैं डॉ0 निशा।

युवक ने कहा- ओह सॉरी! आप हैं डॉ0 निशा ! आपको तो मैं पहचान ही नहीं पाया। दो ही सालों में काफी बदलाव आ गया है।

डॉ0 निशा- कोई बात नहीं। अब डॉ0 बन गये हैं जनाब। अब कहां पहचानेंगे। चलिए कहीं बैठते हैं।

डॉ0 मेहता निशा के आग्रह को टाल नहीं पाये। दोनों मल्लीताल की तरफ चलने लगे। शाम के छह बजे थे। रिमझिम-रिमझिम बारिश की बूंदें पड़ने लगी थीं। डॉ0 मेहता खाली हाथ थे। डॉ निशा ने अपने लाल पर्स में से छतरी निकाली और डॉ मेहता को ओड़ाते हुए बोली- और सुनाइये मेहता जी ! क्या हालचाल हैं आपके ?

डॉ0 मेहता सकुचाते हुए बोले-आप से क्या छिपा है मैडम ! आप तो जानती ही हैं। सरकार ने हमको बाहर का रास्ता दिखा दिया है। ये सरकार भी ना किसी की नहीं होती। जब मर्जी हुई रख लिया। जब मर्जी हुई बाहर निकाल किया।

डॉ0 निशा ने छतरी को संभालते हुए कहा- हां, ऐसा ही है मेहताजी। पिछले आठ-दस सालों में जो अध्यापक डिग्री कालेज में रखे गये हैं, वो भी प्रारंभ में संविदा के आधार पर ही 6 माह के लिए चुने गये थे लेकिन वो सब अभी तक जॉब कर रहे हैं और हमको 6 माह में ही निकाल दिया। हमारे साथ ही अन्याय क्यों ?

डॉ0 मेहता ने बारिश की बूंदों को अपनी कमीज से हटाते हुए कहा- हां निशा जी। इसीलिए तो हमने देहरादून जाकर आंदोलन करने का निर्णय लिया। हमारे कई साथी वहां नहीं आये, बावजूद इसके हमने आंदोलन जारी रखा। उसका परिणाम यह हुआ कि हमें शिक्षा मंत्री द्वारा सकारात्मक आश्वासन दिये गये हैं।

डॉ0 निशा- सिर्फ आश्वासन !

डॉ0 मेहता- हां, अभी तो केवल आश्वासन मिला है उम्मीद है जल्द ही कोई ठोस निर्णय लिया जायेगा।

डॉ निशा0- हां, उम्मीदों पर ही दुनिया कायम है।

डॉ0 मेहता ने भी हामी भरी- क्या करें। हमारी तो जिंदगी ही उम्मीद बन गई है। पांच साल पीएच. डी. में लगाये। पीएच. डी. जो क्या की, गुलामी की प्रोफेसरों की।

डॉ0 निशा ने मेहता की बात का समर्थन करते हुए कहा-हां, ऐसा ही है मेहता जी। मेरे गाइड भी ऐसे ही थे। प्रोजेक्ट का काम देखने के लिए शाम को घर पर बुलाते थे और आधे घंटे तक मुझे ऊपर से नीचे तक घूरते रहते थे। एक दिन तो हद ही कर दी। मुझे रात को आठ बजे कमरे में बुलाने लगे। मैंने साफ मना कर दिया। दूसरे दिन नाराज हो गये। बड़ी मुश्किल से मनाया।

डॉ0 मेहता भावविभोर हो उठे- ऐसे प्रोफेसरों के कारण ही तो उच्चशिक्षा की दुर्गति हो रही है। ऐसा नहीं है कि अच्छे प्रोफेसर नहीं हैं लेकिन अच्छे गाइड भी नसीब वालों को ही मिलते हैं।

डॉ0 निशा- हां सही कहा आपने। भ्रष्ट मानसिकता वाले और कामचोर शिक्षकों के कारण ही उच्च की दुर्गति हो रही है । इसके अलावा कुछ हद तक व्यवस्थाएं भी इसकी जिम्मेदार हैं।

डॉ0 निशा और डॉ0 मेहता दोनों कुमाऊं विश्वविद्यालय के हरमिटेज भवन की तरफ चले जा रहे थे। दोनों विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित एक सेमीनार में भाग के लिए यहां आये थे। कुमाऊं विश्वविद्यालय जिसकी अकादमिक गतिविधियों में पिछले कुछ वर्षों में तेजी से इजाफा हुआ है। कुछ देर चुप्पी छाने के बाद डॉ मेहता ने चुप्पी को तोड़ते हुए कहा- सेमीनार के बहाने ही सही, चलो आज आपसे मुलाकात तो हुई। सुनने में आया है कि जब से नये कुलपति ने कार्यभार ग्रहण किया है, तब से विश्वविद्यालय में कई नये विभागों की स्थापना हुई है।

हां, अब इन नये विभागों में भी पद सृजित होने की संभावना है। आपका क्या इरादा है? एक पद यहां भी खाली है!.. ऐसा कहते हुए डॉ0 निशा ने कनअंखियों से डॉ0 मेहता की तरफ देखा।

डॉ मेहता बोले कुछ नहीं बस मुस्कुरा दिये। अचानक बिजली चमकी और बादलों ने जोर की गर्जन की और डॉ0 निशा ने डरकर डॉ0 मेहता का हाथ थाम लिया। डॉ0 मेहता मन ही मन बोले-चलो, अच्छा हुआ। मछली फंस ही गई!!!

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें